

चारा खरपतवारों से पशुओं का बचाव

पवन कुमार माहोर*

"चारा फसलों के साथ उगने से खरपतवार अक्सर पशु चारा परिवहन करने वाली गाड़ियां और साइलो को भरने में सहायक होते हैं। दूध और मांस में इनकी उपस्थिति से गुणवत्ता प्रभावित होती है। जब भूखे पशुओं को कम गुणवत्तायुक्त खरपतवार मिश्रित चारा खाने के लिए विवश किया जाता है, तब पशुओं से प्राप्त मांस और दूध अजीब स्वाद और पोषण मान में निम्न स्तर का हो जाता है। कुछ खरपतवारों के घटक पशुओं में रोग का कारण बनते हैं, जबकि अन्य विशिष्ट एल्कलॉइड, टैनिन, ऑक्सालेट ग्लूकोसाइट या नाइट्रेट के उच्च स्तर के कारण पशुओं के लिए घातक साबित हो सकते हैं।"

खरपतवारयुक्त और खरपतवाररहित चारे के रासायनिक विश्लेषण कभी-कभी अलग-अलग पोषक मूल्य नहीं दर्शा पाते हैं, विशेषकर जब मिश्रण में फलीदार खरपतवार होते हैं। फीडिंग टेस्ट में पशु खरपतवाररहित चारे के लिए अधिक आकर्षित होते हैं।

खरपतवारों के पशुओं पर हानिकारक प्रभाव

- लैंटाना (लैंटाना कैमरा) की पत्तियां लैंट्रेडीन जहरीले रसायन के कारण पशुओं में तीव्र प्रकाश संवेदनशीलता और पीलिया को प्रेरित करती हैं।
- गाजरग्रास *(पार्थेनियम हिस्टेमफोरस)* पशुओं के संपर्क में आने पर त्वचा की खुजली व सूजन का कारण बनता है और यह पशुओं में एलर्जी उत्पन्न करता है।
- कॉकलेबर या छोटा धतूरा या जैन्थियम स्पेसिस में कॉर्बोक्सीअट्रैक्टीलोसिड नामक जहरीला ग्लाइकोसाइड होता है। इस पौधे के बीज और अन्य भागों में विष होता है। शूकर और छोटे मवेशी पर ये अधिक प्रभाव डालते हैं। यकृत या लीवर इस जहरीले रसायन से अधिक प्रभावित होता है। कॉकलेबर विषाक्तता में सबसे प्रमुख हिस्टोपैथोलॉजिकल लक्षण यकृत के बड़े पैमाने पर गलन के लिए तीव्र दशा पैदा करता है। लीवर की चोट से पीलिया रोग हो जाता है। पशुओं में क्रोनिक हैपेटाइटिस देखा जाता है। अन्य पैथोलॉजिकल लक्षणों में गैस्ट्रोएंटेराइटिस शामिल है, जिसमें म्यूकोसा का मोटा होने के साथ, यकृत और हृदय संबंधी रक्तस्राव होते हैं। कुछ मामलों में गुर्दे की चोट ट्यूबलर गिरावट की ओर ले जाती है।
- जॉनसनग्रास (सोरघम हालेपेंस) जुताई के चरण में पशुओं के लिए उनमें मौजूद उच्च प्रूसिक एसिड के कारण जहरीले होते हैं।
- *आगेरटम स्पेसिस* हिमालय और नीलगिरी में बहुतायत में उगने वाले खरपतवार अक्सर पशुधन के लिए खतरनाक पाए जाते हैं।
- पंक्चरवाइन *(ट्रिबुलस टेरेस्ट्रिस)* शुष्क भूमि का एक खरपतवार है। इसके कारण भेड़ में प्रकाश के प्रति संवेदनशीलता पैदा होती है। इसके साथ ही कांटेदार फल चरने वाले पशुओं के खुरों में यह घाव कर देते हैं। *ट्रिबुलस टेरेस्ट्रिस* की रीढ़ पशुओं की त्वचा को पंचर कर सकती है। जब इनका सेवन किया जाता है, तो ये पेट को भी नुकसान पहुंचा सकते हैं।
- *जैंथियम स्ट्रैमारियम, अचिरांथस एस्पेरा, सेक्रस सेटिगेरस, सिरसियस अर्वेन्स* और *सेक्रस इंसर्टस* के कांटेदार फल पशुओं के मुंह, पूंछ और शरीर पर

*भाकृअनुप-केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर (राजस्थान)

चिपक जाते हैं, जो उन्हें बुरी तरह से परेशान करते हैं।

- हेलोगेटन शुष्क और अर्द्धशुष्क क्षेत्रों की एक खरपतवार है, जिसमें अपनी उच्च ऑक्सालेट मात्रा पायी जाती है
- चिकोरियम इंटीबस, एलियम, आर्गेमोन मेक्सिकाना, ब्रैसिका केबर, एंथेमिस कोटुला, थलप्सी, एम्ब्रोसिया, हेलेनियम और ऑक्सालिस एसिटोसेला आदि पशु उत्पादों को प्रभावित करते हैं।
- राजस्थान में एस्ट्रगलास और ऑक्सीट्रोपिस प्रजातियों के तेजी से फैलने को लेकर चिंता बढ़ रही है। यह भेड़ और बकरी के लिए जहरीला होता है। भेड़ और मवेशियों पर गर्भपात और टेट्राटोजेनिक प्रभाव डालते हैं। इस तरह के खरपतवारों में एक विषैला *अल्कलॉइड स्वेनसोनाइन* होता है।
- रोडोडेंड्रोन प्रजातियों को कश्मीर में चरने वाले दुधारू पशुओं में दस्त पैदा करने के लिए जिम्मेदार पाया गया है। यह प्रभावित पशुओं के दूध व खून को प्रभावित करता है।
- पत्तेदार स्परेज *(यूफोर्बिया एसुला)* मवेशियों में दस्त और कमजोरी का कारण बनता है और यह भेड़ के लिए घातक है।
- *क्रोटोलारिया* चूजे के लिए घातक है। स्वीटक्लोवर *(मेलिलोटस अल्बा)* में एक डाइक्यूमरिन होता है, जो पशुओं में एक एंटीब्लड-कौयगुलांट के रूप में कार्य करता है।
- *हेलियोट्रोपियम एम्प्लेक्सिकौल, हेलेनियम* और धतूरा *स्ट्रैमोनियम* पशुओं के लिए अन्य रोग पैदा करने वाले खरपतवार हैं।
- सूखे की स्थिति में *चेनोपोडियम, ऐमारेंथस, सिर्सियम* और *पॉलीगोनम एसपीपी* जैसे खरपतवारों में नाइट्रेट का स्तर 1000 पीपीएम या उससे अधिक हो जाता है, जो पशुओं में श्वासावरोध का कारण बनता है।
- नीटल के बाल पशुओं में गंभीर खुजली और सूजन पैदा कर सकते हैं।

खरपतवारों का पशु उत्पादित रेशों पर प्रभाव

ऊन पालतू भेड़ों से प्राप्त की जाती है, किन्तु बकरी, याक आदि अन्य पशुओं के बालों से भी ऊन बनाया जा सकता है। 'पश्मीना' विश्व में पशुओं से प्राप्त सबसे



मवेशियों से प्राप्त रेशों की गुणवत्ता में कमी

अच्छा रेशा माना गया है। यह कश्मीर और तिब्बत में पाई जानेवाली पश्मीना बकरियों से प्राप्त होता है। *ट्रिबुलस टेरेस्ट्रिस, सेंकरस सिल्लिएरिस, जैन्थियम स्पेसिस*-यह पशु उत्पादित रेशों की गुणता में कमी लाता है। रेशों की तन्यता, सामर्थ्यता, फाइनेंस इत्यादि को प्रभावित कर निम्न मूल्य का बना देता है।

पशुचारा उत्पादन के समय खरपतवारों का प्रबंधन

चारागाह प्रणालियों में खरपतवारों का प्रबंधन चारा फसल उगाने से बहुत पहले शुरू कर देना चाहिए। विशेषकर खरपतवार चारागाहों के लिए यह गंभीर समस्या है, इसलिए उन्हें पहले से खत्म करना महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से बारहमासी चौड़ी पत्तियां और घास चारा फसल लगाने से पहले प्रबंधन करना बहुत महत्वपूर्ण है। इसके अलावा चारा फसल उगाने से पहले द्विवार्षिक खरपतवारों को समाप्त कर देना चाहिए। यदि इन खरपतवारों को बीज बोने से पहले नहीं हटाया जाता है, तो वे कई वर्षों तक बने रह सकते हैं। बुआई से पहले या समय पर खरपतवारों को नियंत्रित करने की लागत को एक निवेश माना जा सकता है। खरपतवार नियंत्रण में सस्य क्रियाएं भी शामिल हैं, जो फसल को प्रतिकूल परिस्थितियों के विरुद्ध अधिक प्रतिस्पर्धी बनाती हैं। सस्य क्रियाओं में शामिल हैं-बीज क्यारी को ठीक से तैयार करना, इष्टतम तिथि पर रोपण, ठीक से खाद डालना, उच्च घनत्व पर रोपण, सही बोने की दर का उपयोग करना, उच्च गुणवत्ता वाले फसल बीज का चयन करना, जो कि खरपतवार से मुक्त हो और विशेष क्षेत्र के लिए किस्में अनुकूलित प्रजातियों का चयन करना। एक एकीकृत कार्यक्रम जो सस्य, यांत्रिक, रासायनिक और जैविक नियंत्रण विधियों को जोड़ता है, चारागाह प्रणालियों में प्रभावी आर्थिक खरपतवार प्रबंधन प्रदान कर सकता है। विचार करें कि विभिन्न विधियों का समन्वयन कैसे किया जा सकता है और ध्यान दें कि कैसे खरपतवार जीवनचक्र और अन्य विकास विशेषताएं प्रबंधन विकल्पों को प्रभावित करती हैं। महत्वपूर्ण यह है कि स्थापित चारागाह प्रणालियों में खरपतवारों की रोकथाम सबसे महत्वपूर्ण उपाय है।

पशु उत्पादित रेशा प्राप्त करते समय खरपतवारों का प्रबंधन

ट्रिबुलस टेरेस्ट्रिस, सेंकरस सिल्लिएरिस, जैन्थियम स्पेसिस-यह पशु उत्पादित रेशों की गुणता में कमी लाता है। अतः सर्वप्रथम इस प्रकार के पौधे उगे हुए स्थानों पर पशुओं को चराने से बचना चाहिए। यदि *ट्रिबुलस* टेरेस्ट्रिस, *सेंकरस सिल्लिएरिस, जैन्थियम स्पेसिस* के कांटेदार भाग पशुओं के रेशों से चिपक जाएं, तब तुरंत ही इन्हें हटा देना चाहिए, ताकि अधिक हानि से बचा जा सके। खरपतवार प्रभावित रेशों को अप्रभावित रेशों से पृथक कर विक्रय करना चाहिए, जिससे कि कपड़ों की गुणता प्रभावित नहीं हो। ■

पशु चराई में खरपतवारों का प्रबंधन

पशु चराई या पशु को खिलाते समय खरपतवाररहित चारा खिलाने पर ध्यान देना चाहिए। पशुओं को ऐसे स्थान पर चराने से बचना चाहिए, जहां पर पशुओं के लिए कष्टकारी खरपतवारों का बाहुल्य हो तथा जहरीले खरपतवार पाए जाते हों। पशु चारे में से कांटेदार खरपतवार उत्पादों को हटा देना चाहिये। पशु चारे में से हानिकारक जहरीले खरपतवारों/अवशेषों को अलग कर देना चाहिए। खुजली करने वाले खरपतवार जैसे कवांच आदि के फलों को अलग कर देना चाहिए। पशुओं को ऐसे स्थानों पर चराने से बचना चाहिए, जहां पर नोकसियस खरपतवारों का बाहुल्य हो।